औरतों का अपना बैंक

जुही जैन

पिछले दिनों की बात है। गर्मी की छुट्टी बिताने मैं गोवा गई। बहुत सुना था इस सुन्दर शहर के बारे में। सोचा था यहां सब कुछ बड़ा शांत है। उस समय मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि यहां मेरा अनुभव इतना रोचक होगा। यही अनुभव आपके साथ बांट रही हूं।

गोवा की राजधानी है पणजी। पणजी की सड़कों पर हर चार-पांच दुकानों में से एक दुकान सूखे मेवे की या फिर शराब की है। एक दिन इन्हीं सड़कों पर घूमते-घूमते एक बोर्ड देखा 'विमेंस कोओपरेटिव बैंक'। गोवा में सड़कों पर औरतों को चीकू, संतरे और मसाले बेचते तो हमने कई बार देखा है। मेलों और नव वर्ष पर नाचते-गाते भी देखा है। कार्निवल के दिनों में मस्ती लुटाते भी देखा है। पर इस कदर चुपचाप, बिना हलचल के बैंक जैसी संस्था चलाते देखने का यह पहला अनुभव था।

औरतों के लिए: औरतों का बैंक

आप सोचेंगी बैंक है, इसमें क्या रोचक और नई बात है। पर आपको जानकर हैरानी होगी। इस बैंक की खासियत यह है कि यह पूरी तरह से औरतों का बैंक है। इस बैंक में काम करने वाली सभी औरतें हैं। इसकी शेयर-होल्डर भी औरतें हैं। इसमें खाता भी केवल औरतें ही खोल सकती हैं। यानि यह बैंक पूरी तरह औरतों के विकास को ध्यान में रखकर चलाया गया है। और तो और इसमें लगने वाली पूंजी भी औरतों ने इकट्ठी की थी। लेकिन यह सब हुआ कैसे?

एक सपना: बैंक हो हमारा अपना

इस बैंक की अध्यक्षा है श्रीमती प्रिया भोबे। वह कहती हैं—'घर चलाना, बचत करना तो कोई हम औरतों से सीखे। फिर जो काम हम छोटे पैमाने पर अपने घरों में, रोज़मर्रा की ज़िंदगी में करती हैं, वही बड़े पैमाने पर बाहर क्यों नहीं कर सकती हैं?'

इसी सोच के साथ बीस साल पहले, 1973 में श्रीमती लिबी लोबो सरदेसाई नाम की महिला ने इस बैंक की नींव रखी। बिना किसी सरकारी अनुदान या बाहरी मदद के। करीब पच्चीस हज़ार रुपये सौ औरतों ने मिलकर जुटाए। उधार लेकर भी नहीं। घर के खर्चों में से बचत करके। सभी सौ औरतें गृहणियां थीं। अपना विकास करना चाहती थीं। बैंक खोलकर अपने जैसी तमाम औरतों को रोज़गार के बेहतर मौके देना चाहती थीं। अपनी मदद करना उनका सपना था। और सपना था कि एक बैंक उनका अपना हो।

वे जानती थीं पैसे में बड़ी ताक़त होती है। आमदनी बढ़ने से परिवार में उनकी स्थिति मज़बूत होगी। बस, हो गई इस बैंक की स्थापना। सभी सौ औरतें इस बैंक में शेयर होल्डर बन गईं। मिलकर काम करने लगीं।

इस बैंक में काम करने वाली औरतों की संख्या सत्रह है। आठ निर्देशिकाएं और एक अध्यक्षा। महीने में एक या दो बार बोर्ड की बैठक होती है। इस बैठक में बड़े कर्ज़ों के बारे में मिलकर फैसले लिए जाते हैं। पांच हज़ार का कर्ज़ा मेम्बर अपनी गारंटी पर दे सकती है। पर इससे बड़े कर्ज़ों के लिए पूरे समूह की रज़ामंदी ज़रूरी होती है। शुरू-शुरू में कर्ज़े केवल शादी-ब्याह और रोज़गार के लिए ही दिए जाते थे। पर अब मकान बनाने के लिए भी कर्ज़ा मिल जाता है।

कितना कुछ बदल गया

बैंक शुरू होने से औरतों को बहुत फायदा हुआ। गोवा में औरतें अचार, पापड़, मसालों की छोटी-छोटी दुकाने चलाती हैं। सड़क के किनारे पटरी पर अपना सामान रखकर बेचती हैं। बैंक से कर्ज़ा मिलने पर उन्हें अपने काम को बढ़ाने के नए-नए मौके मिले। पहले वे सामान टोकरियों में रखकर या जमीन पर फैलाकर बेचती थीं। अब उनके पास अपनी दुकाने हैं। आमदनी बढ़ी तो घर में इज्ज़त बढ़ी। मान-सम्मान मिला। रुतबा ऊंचा हुआ। जिंदगी बेहतर बनी। इस सबसे घर का नियंत्रण काफी हद तक उनके अपने हाथ में आ गया। उन पर ज़ोर-जबर्दस्ती और शोषण की संभावना भी कम हुई।

वैसे भी गोवा में उत्तरी भारत के अनुपात में औरतों पर अत्याचार की वारदातें कम होती हैं। दहेज की प्रथा यहां भी है। समाज में ज्यादा लोग हिन्दू और ईसाई धर्म को मानते हैं। दोनों समाजों में लेन-देन का रिवाज भी है। पर दहेज के लिए औरतों पर ज़ोर और हिंसा करने की खबरें कम ही सुनने को मिलती हैं।

क्या वास्तव में धर्म का असर है?

गोवा में औरतों की स्थिति काफी सुखद है। उन पर दबाव भी कम है। वह हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं। पर इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है? आम धारणा यह है कि यह ईसाई धर्म का प्रभाव है। यहां केवल ईसाई औरतें ही खुलकर बाहर आती हैं। जबकि हिन्दू औरतें घर में ही रहती हैं। पर यह सच नहीं हैं। धर्म का प्रभाव काफी होता है। पर औरतों की खुद की मेहनत और जागरूकता को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। न ही उनके पुरुष साथियों के योगदान और सहयोग को। दोनों समाजों में औरतों की स्थिति एक सी है। दोनों ही घर के बाहर काम करती हैं। दोनों ही परेशानियों का डटकर मुकाबला करती हैं।

अब आगे क्या इरादा है?

इस बैंक की सफलता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। आज इसके पास दो करोड़ रुपये की जमा-पूंजी है। पांच हज़ार औरतें इसकी शेयर होल्डर हैं। अभी तक बैंक एक किराए के भवन में चलता था। अब इसका अपना भवन तैयार है। भारत सरकार बैंक की इस सफलता से बेहद खुश है। इस तरह के बैंक भारत में और जगह खोलने का इरादा किया गया है।

□